



VISION IAS

www.visionias.in

P155

कला एवं संस्कृति -1

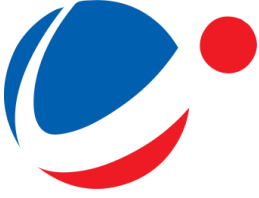
सामान्य अध्ययन



णमो आयरियाणं

Plus Pramesh eLib

www.pluspramesh.in



VISIONIAS

www.visionias.in

Classroom Study Material

कला एवं संस्कृति

00. भारतीय कला एवं संस्कृति

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

विषय सूची

1. परिचय	3
2. अध्याय विवरण	4

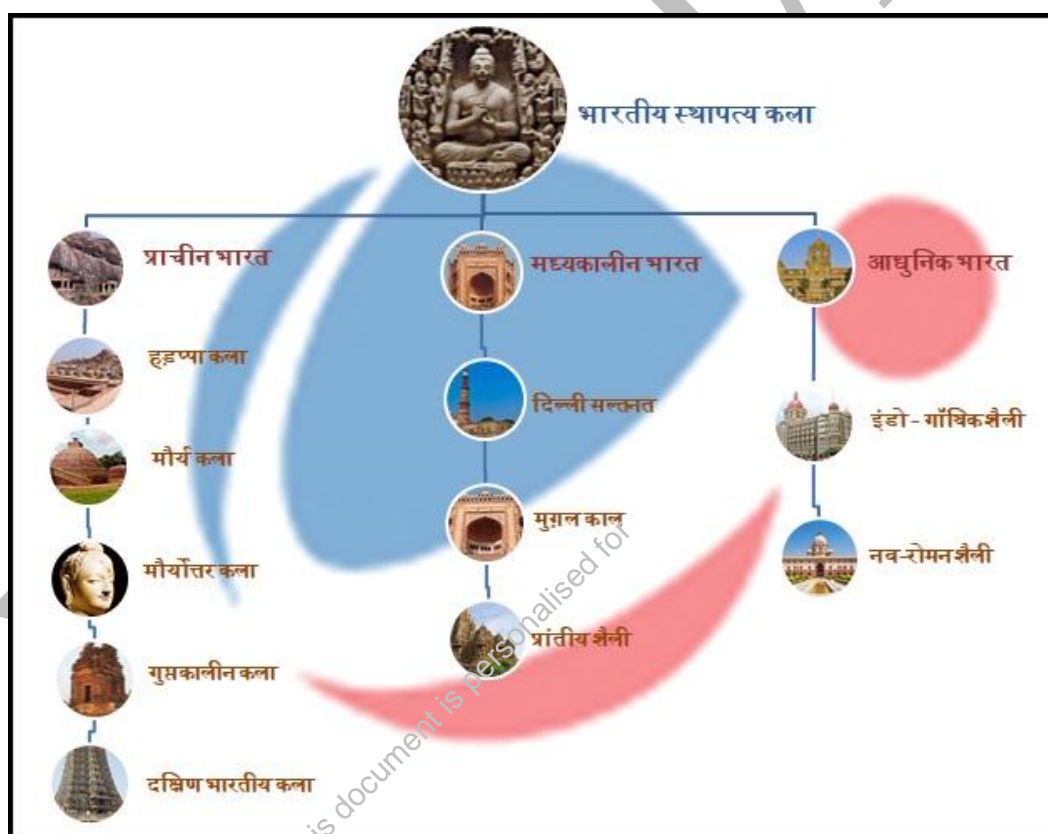
VISION IAS

This document is personalised for

1. परिचय

कला मानवीय भावनाओं की सहज अभिव्यक्ति है। कला का उद्द्म मानव की सौंदर्य भावना का परिचायक है। कला का अर्थ है 'आनंद प्रदान' करना। अभिनवगुप्त ने कला को 'कलागति वाद्यादिका' कहा है, जिससे स्पष्ट होता है कि कला शब्द का प्रयोग ललित कला हेतु किया जाता है। कला मुख्यतः दो प्रकार की मानी जाती है। 'उपयोगी कला' और 'ललित कला'। वह कला जो हमारी दैनंदिन की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है, 'उपयोगी कला' कहलाती है। वह कला जिससे सौंदर्य की अनुभूति तथा आनंद की प्राप्ति होती है, उसे 'ललित कला' (fine art) कहा जाता है। ललित कला, फ्रेंच भाषा के शब्द 'ब्यूऑक्स आर्ट्स' का अनुवाद है, जिसका अर्थ उन कलाओं से है जिनका सम्बन्ध केवल सौन्दर्य से हो। कलाविदों ने ललित कलाओं का विभाजन कुछ विशिष्ट कलाओं के आधार पर किया है, जो निम्नलिखित हैं-

- वास्तुकला अथवा स्थापत्य कला- इस कला के अंतर्गत भवन, मंदिर, स्तूप, गुफा, मस्जिद, मकबरा, चर्च आदि का निर्माण किया जाता है。
 - भारतीय वास्तुकला को निम्नानुसार वर्गीकृत किया जा सकता है:



- मूर्तिकला- इस कला के अंतर्गत किसी वास्तु का रूप, रंग एवं आकार आदि निर्मित किया जाता है। यह कला का वह रूप है जो त्रिविमीय (three-dimensional) होता है। यह वास्तु की सहयोगी कला है। पत्थर, धातु, मिट्टी, काष्ठ आदि इसके माध्यम के रूप में प्रयुक्त होते हैं।
- चित्रकला- इस कला में रूप, रंग, आकार तथा लम्बाई एवं चौड़ाई होती है। यह मनोभावों को स्पष्ट करने में समर्थ होती है। चित्रकला में निम्नलिखित तत्त्व अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं, जिन्हें चित्रकला के 'षडंग' के रूप में जाना जाता है।



- रूपभेद
- प्रमाण
- भाव
- लावण्य
- सादृश्य
- वर्णिका भंग



चित्रकला के निम्नलिखित रूप दृष्टिगोचर होते हैं

- भित्ति चित्र
- चित्रपट
- चित्रफलक
- लघु-चित्रकारी
- संगीत कला- इस कला का आधार 'स्वर' है। स्वर का मूल 'नाद' या 'ध्वनि' है। स्वरों की स्वच्छंद गति को छंद में बांधकर इसके उतार चढ़ाव से 'लय' उत्पन्न किया जाता है। उसी संगीत को सर्वोत्तम माना गया है जिसको सुनने के बाद मंत्रमुग्ध श्रोता आंतरिक संगीतमय व आत्मिक शान्ति को प्राप्त करता है। इसी आत्मिक शान्ति की प्राप्ति ही संगीत की सार्थकता का प्रमाण होती है। 'संगीत रत्नाकर' ग्रन्थ में उल्लेख किया गया है कि गीत, वाद्य और नृत्य इन तीनों कलाओं का समूह ही संगीत है।
- काव्य कला- यह कला 'शब्द' एवं 'अर्थ' पर आधारित होती है, जिसमें स्वर एवं व्यंजन दोनों ही प्रयुक्त होते हैं। काव्य के पांच प्रमुख सिद्धांत होते हैं-
 - गुण
 - रीति
 - अलंकार
 - वक्रोक्ति
 - औचित्य

2. अध्याय विवरण

प्रथम अध्याय

- इस अध्याय में 'सिन्धु घाटी सभ्यता' तथा 'मौर्य काल' की वास्तुकला, मूर्तिकला, मनकों, मुहरों और मृद्भांडों का अध्ययन किया जाएगा।

द्वितीय अध्याय

- इस अध्याय में 'मौर्योत्तर काल' तथा 'शुंग काल' की कलाओं का अध्ययन किया जाएगा। मौर्योत्तर काल में विशेष रूप से गुहा (गुफा) स्थापत्य, स्तूप स्थापत्य तथा मूर्तिकला का अध्ययन किया जाएगा।

गुहा वास्तुकला, मूर्तिकला, अंतर्गत सिन्धु वास्तुकला और उनकी

विभिन्न शैलियों का अध्ययन किया जाएगा।

तृतीय अध्याय

- इस अध्याय में दक्षिण भारत में मंदिर वास्तुकला, द्रविड़ मंदिरों की उपशैलियों, मध्यकालीन भारत में वास्तुकला तथा आधुनिक काल की वास्तुकला का अध्ययन किया जाएगा। मध्यकालीन भारत में वास्तुकला के अंतर्गत सल्तनत कालीन वास्तुकला, प्रांतीय राज्यों की वास्तुकला शैलियों तथा मुगल वास्तुकला का अध्ययन किया जाएगा।

चतुर्थ अध्याय

- इस अध्याय में 'भारतीय चित्रकला' का अध्ययन किया जाएगा। इसके अंतर्गत भारतीय चित्रकला के षडाङ्ग, भारतीय शिला चित्रकला, भित्ति चित्र, लघु चित्रकारी, मुगल चित्रकला, चित्रकला की क्षेत्रीय शैलियाँ, अलंकृत कला या लोक चित्रकला तथा आधुनिक चित्रकला का अध्ययन किया जाएगा।

पंचम अध्याय

- इस अध्याय में 'भारतीय शास्त्रीय नृत्य' तथा 'लोक एवं आदिवासी नृत्य' का अध्ययन किया जाएगा। भारतीय शास्त्रीय नृत्य के अंतर्गत विशेष रूप से भारतनाट्यम, कुचीपुडी, कथकली, कथक, मणिपुरी ओडिसी, सत्रिया और मोहिनीअट्टम नृत्य का अध्ययन किया जाएगा।

षष्ठम अध्याय

- इस अध्याय में रंगमंच और उसके विभिन्न रूपों का अध्ययन किया जाएगा।

सप्तम अध्याय

- इस अध्याय में प्राचीन विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का अध्ययन किया जाएगा। इसके अंतर्गत गणित, ज्योतिष एवं खगोल विद्या, भौतिक तथा रसायन विज्ञान और चिकित्सा शास्त्र का अध्ययन किया जाएगा। साथ ही विभिन्न कालों की प्रौद्योगिकी और भारत के महान वैज्ञानिकों का भी अध्ययन किया जाएगा।

अष्टम अध्याय

- इस अध्याय में भारत के विभिन्न धर्मों और भारतीय दर्शन के छः सम्प्रदायों (षट्दर्शन) का अध्ययन किया जाएगा।

नवम अध्याय

- इस अध्याय में लोक संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया जाएगा।

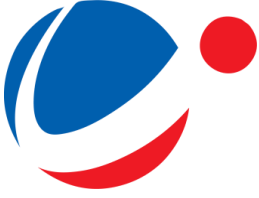
दशम अध्याय

- इस अध्याय में भारतीय भाषा एवं साहित्य का अध्ययन किया जाएगा।

एकादश अध्याय

- इस अध्याय में भारत के सांस्कृतिक इतिहास का अध्ययन किया जाएगा।





VISIONIAS

www.visionias.in

Classroom Study Material

कला एवं संस्कृति

01. भारतीय कला -1

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

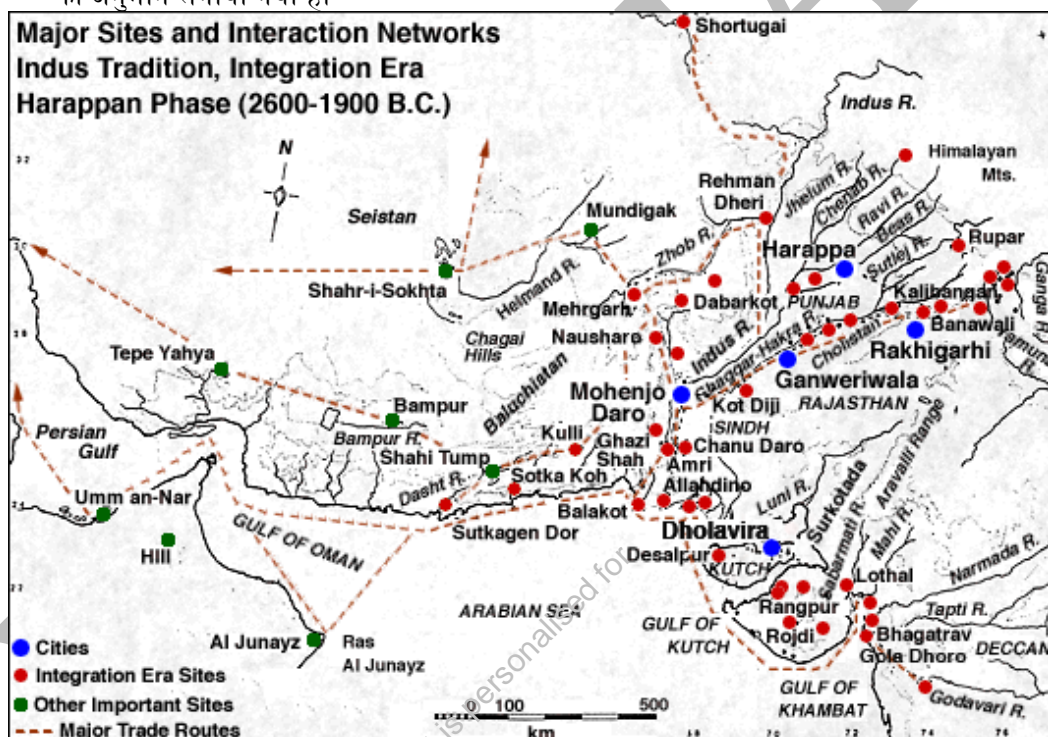
विषय सूची

1. हड़प्पा / सिन्धु घाटी सभ्यता	3
1.1. हड़प्पा / सिन्धु घाटी सभ्यता की कला	3
1.1.1 नगर-नियोजन (Town Planning)	3
1.1.2 मूर्तिकला (Sculpture)	5
1.1.2.1. प्रस्तर मूर्तियाँ	5
1.1.2.2. धातु मूर्तियाँ	5
1.1.2.3. मृणमूर्ति कला (Terracotta)	6
1.1.3 मुहरें (Seals)	7
1.1.4. मुहरों का महत्व (Significance of Seals)	8
1.1.5. मृद्भांड (Pottery)	8
1.1.6. मृद्भांडों के उपयोग (Use of Pottery)	8
1.1.7. मनके और आभूषण (Beads and Ornaments)	9
1.1.8. सिन्धु घाटी सभ्यता का पतन	10
2. सिन्धु घाटी सभ्यता के पतन के पश्चात वास्तुकला	10
3. मौर्य कला (Mauryan Art)	11
3.1. मौर्य वास्तुकला (architecture)	12
3.1.1. चन्द्रगुप्त का राजप्रासाद	12
3.1.2. पाटलिपुत्र का नगर स्थापत्य	12
3.2. स्तम्भ (Pillars)	13
3.3. मौर्य कालीन स्तंभों की ईरानी स्तंभों से तुलना	14
3.4. सारनाथ सिंह शीर्ष (Sarnath Lion Capital)	14
3.5. स्तूप (Stupas)	15
3.6. गुफाएँ (Caves)	17
3.7. मूर्तिकला (Sculpture)	17
3.8. मृणमूर्तियाँ	18
3.9. मनके	19
3.10. मृद्भांड (Pottery)	19

1. हड़प्पा / सिंधु घाटी सभ्यता

(Harappan Civilization/ Indus Valley Civilization)

- हड़प्पा सभ्यता का उद्भव तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व (BCE) के उत्तरार्ध में हुआ। यह एक कांस्ययुगीन नगरीय सभ्यता थी। प्राचीन मिस्र और मेसोपोटामिया के साथ-साथ यह विश्व की प्राचीनतम तीन सभ्यताओं में से एक थी।
- यह सभ्यता सिंधु नदी तथा समकालीन पश्चिमोत्तर भारत और पूर्वी पाकिस्तान क्षेत्र से होकर बहने वाली घग्गर-हाकरा नदी की घाटियों में विकसित हुई थी। सिंधु घाटी सभ्यता के दो प्रमुख स्थल हड़प्पा और मोहनजोदड़ो क्रमशः रावी एवं सिंधु नदी के किनारे अवस्थित हैं।
- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो तथा इस सभ्यता के अन्य स्थलों की खुदाई से यह पता चलता है कि सिंधु घाटी सभ्यता अत्यंत विकसित नगरीय सभ्यता थी, जहाँ पर विशिष्ट नगरीय सभ्यता और निर्माण कौशल के तत्व उपस्थित थे।
- हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की नगर-नियोजन प्रणाली, नगर-नियोजन के प्रारंभिक उदाहरणों में से एक है। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो आधुनिक पाकिस्तान में अवस्थित हैं। गुजरात में लोथल और धोलावीरा, हरियाणा में राखीगढ़ी, पंजाब में रोपड़, राजस्थान में कालीबंगा और बालाथल इस सभ्यता के अन्य प्रमुख केंद्र थे।
- अपने विकास के चरम काल में सिंधु घाटी सभ्यता की जनसंख्या लगभग पांच लाख से अधिक होने का अनुमान लगाया गया है।



सिंधु घाटी सभ्यता का क्षेत्रीय विस्तार

1.1. हड़प्पा / सिंधु घाटी सभ्यता की कला

1.1.1 नगर-नियोजन (Town Planning)

सिंधु घाटी सभ्यता में एक परिष्कृत और तकनीकी रूप से उन्नत नगरीय संस्कृति के लक्षण दिखाई देते हैं, जिसने इसे 'प्रथम नगरीय सभ्यता' के रूप में स्थापित किया। अत्याधुनिक जल निकासी प्रणाली तथा योजनाबद्ध सड़कों और घरों से पता चलता है कि आर्यों के आगमन से पहले भारत में एक अति विकसित संस्कृति का अस्तित्व था। सिंधु घाटी सभ्यता के स्थलों की खुदाई अंग्रेजों द्वारा स्थापित भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण की देखरेख में हुई। सिंधु सभ्यता के नगर नियोजन की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित थीं-





- समकालीन नगरीय व्यवस्था आयताकार ग्रिड प्रणाली पर आधारित थी। इस प्रणाली में सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं।
- इस सभ्यता के लोगों ने मुख्यतः तीन प्रकार के भवनों का निर्माण किया- निवास गृह, स्तम्भों वाले बड़े हॉल और सार्वजनिक स्नानागार।
- नगरीय आवासों को जलापूर्ति कुओं के माध्यम से होती थी।
- प्राचीन सिंधु घाटी स्थलों से प्राप्त सीवररेज और जल निकासी प्रणाली समकालीन किसी भी नगरीय स्थल से पायी गई प्रणाली की तुलना में कहीं अधिक उन्नत थी।
- ढकी हुई नालियों और मेनहोल (manholes) की उन्नत व्यवस्था थी। भवन निश्चित आकार की पकाई गई ईंटों से निर्मित किये गए थे। इन ईंटों के प्रचलित आकार का अनुपात 4:2:1 था। इमारतों में पत्थरों और लकड़ियों के भी प्रयोग होने के साक्ष्य मिले हैं।
- भवनों में मिली सीढ़ियों से प्रतीत होता है कि दो मंजिले भवन का भी निर्माण हुआ था।
- सामान्यतः नगरों का विभाजन 'गड्डी या दुर्ग क्षेत्र' और 'निचले नगर' में हुआ था। हालांकि कहीं-कहीं इनके अपवाद भी हैं, जैसे धौलावीरा नगर तीन भागों में बंटा हुआ था।
- गड्डी/ दुर्ग क्षेत्र कुलीन वर्ग के लोगों की बस्ती प्रतीत होती है, लेकिन इसका क्या उद्देश्य था यह अभी भी विवाद का विषय है। यद्यपि किले चहारदीवारी/ रक्षा-प्राचीर से घिरे थे, परन्तु यह अभी तक स्पष्ट नहीं है कि इन संरचनाओं का प्रयोग सुरक्षा की दृष्टि से किया गया था या बाढ़ के पानी को मोड़ने के लिए।
- अन्नागार एक महत्वपूर्ण संरचना थी जोकि गड्डी/ दुर्ग क्षेत्र में स्थित थी। इसका निर्माण-कार्य उत्कृष्ट था और इसमें युक्तिपूर्वक वायु-निकासी के साधन तथा फसल दावने के लिए चबूतरे भी बने हुए थे।
- सार्वजनिक स्नानागार सिंधु सभ्यता के नगरों की एक सामान्य विशेषता थी, मोहनजोदड़ो का विशाल-स्नानागार इसका प्रमुख उदाहरण है। इसका फर्श पकी हुई ईंटों का बना हुआ है। पास के कमरे में ही विशाल कुँआ था, जिससे पानी निकालकर हौज़ में डाला जाता था। इसके चारों तरफ गलियां और कमरे बने हुए थे तथा जलाशय में उतरने के लिए उत्तर और दक्षिण दिशा में सीढ़ियों की व्यवस्था थी। उपयोग किये गए जल के निकासी की भी समुचित व्यवस्था थी। इस स्नानागार का उपयोग संभवतः सार्वजनिक रूप से धार्मिक अनुष्ठान अथवा किसी पवित्र कार्य हेतु किया जाता था।
- मोहनजोदड़ो से एक 'सभाभवन' के ध्वंसावशेष मिले हैं, जिसकी छत 20 स्तम्भों पर टिकी हुई है। संभवतः धार्मिक सभाओं हेतु इसका उपयोग किया जाता था। यहाँ से एक 'पुरोहित आवास' भी

इसे 'पुरोहित' जैसे ब्रिहस्पति आश्रमों के सिद्धांतों हेतु निर्मित बताया है।

- अधिकांश नगरवासी व्यापारी या कारीगर प्रतीत होते हैं, जो एक ही तरह के व्यवसाय करने वाले लोगों के साथ निवास करते थे।
- कपास और ऊन की कताई इस सभ्यता के लोगों मध्य काफी प्रचलित थी।
- सिंधु घाटी सभ्यता के स्थापत्य अवशेषों से कहीं भी स्पष्ट रूप से मंदिर स्थापत्य के साक्ष्य प्राप्त नहीं हुए हैं।